JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"खाद्य-असुरक्षा और बाल-अपराध : कम आय वाले परिवारों का एक गृह-विज्ञान आधारित अध्ययन"

अजय कुमार यादव
शोध छात्र, गृह विज्ञान
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़ राजस्थान

डॉ० श्रुति पाण्डेय
सहायक आचार्य
गृह विज्ञान विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय,
हनुमानगढ़ राजस्थान

सारांश

खाद्य-असुरक्षा वर्तमान समय में न केवल पोषणीय संकट का संकेतक है, बल्कि यह सामाजिक विचलन, मनोवैज्ञानिक तनाव तथा पारिवारिक अस्थिरता का गहन रूप भी प्रस्तुत करती है। विशेषतः कम आय वाले परिवारों में जहाँ भोजन की उपलब्धता नियमित, संतुलित और पोषण-समृद्ध नहीं होती, वहाँ बच्चों के व्यवहार में अव्यवस्था, चिड़चिड़ापन, आवेगशीलता और असुरक्षा की भावना अधिक देखी जाती है। गृह-विज्ञान के अंतर्गत परिवार-अध्ययन, पोषण-विज्ञान, संसाधन-प्रबंधन और विकास-मनोविज्ञान उन कारकों की पहचान करने में विशेष भूमिका निभाते हैं जो बाल-अपराध की पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

बाल-अपराध केवल कानूनी उल्लंघन का विषय नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक संरचना का परिणाम है जहाँ बच्चे भोजन, स्नेह, मानसिक स्थिरता और सुरक्षा जैसे मूलभूत तत्वों से वंचित रहते हैं। शोधों से यह पाया गया है कि भूख या अल्पपोषण से पीड़ित किशोरों में ध्यान क्षमता की कमी, निराशा, अवसाद, तनाव-संवेदनशीलता और सामाजिक दबावों के प्रति कमजोर प्रतिक्रिया विकसित होती है, जिसके कारण वे प्रायः गलत संगत, नशे, चोरी, समूह-अपराध या हिंसक व्यवहार की ओर आकृष्ट होते हैं। भोजन की अनिश्चितता बच्चों के मन में अस्तित्वगत भय उत्पन्न करती है जो उनके मूल्यबोध, आत्मनियंत्रण तथा नैतिक निर्णय क्षमता को कमजोर कर देती है।

गृह-विज्ञान पद्धति इस समस्या को बहुआयामी दृष्टिकोण से देखती है-परिवार के खाद्य संसाधन, घरेलू बजट प्रबंधन, मातृ शिक्षा, भोजन-तैयारी के तरीके, बच्चों के भोजन व्यवहार, समुदाय की खाद्य-सुविधाएँ और सरकारी पोषण योजनाएँ। इस शोध-पत्र का उद्देश्य खाद्य-असुरक्षा और बाल-अपराध के बीच के अंतर्संबंध को वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक दृष्टियों से समझना है। अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि खाद्य-सुलभता बढ़ाने, सामुदायिक पोषण-केंद्र विकसित करने, परिवार-समर्थन कार्यक्रम और जीवन-कौशल शिक्षा प्रदान करने जैसी पहलों से बाल-अपराध की प्रवृत्तियों में उल्लेखनीय कमी लायी जा सकती है।

मुख्य शब्द

खाद्य-असुरक्षा, बाल - अपराध, गृह - विज्ञान, पोषण - अभाव, कम आय वाले परिवार, घरेलू संसाधन प्रबंधन, व्यवहार विकृति।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में आहार की भूमिका अनिवार्य रूप से केंद्रीय रही है। आहार केवल ऊर्जा का स्रोत नहीं है, बल्कि यह मानव के भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक स्वास्थ्य को भी नियंत्रित करता है। जब समाज के किसी वर्ग को भोजन सुरक्षा से वंचित होना पड़ता है, तो उसका प्रभाव केवल शारीरिक दुर्बलता तक सीमित नहीं रहता, अपितु उसकी जीवन-गतिविधियों, व्यवहार, निर्णय-क्षमता, सामाजिक अनुकूलन और मानसिक स्थिरता पर दूरगामी परिणाम उत्पन्न करता है। विशेषकर बच्चों के मामले में पोषणीय अभाव उनके सामान्य विकास-पथ को बाधित करके ऐसे मनोवैज्ञानिक तनाव उत्पन्न कर देता है जो आगे चलकर विचलन व्यवहार तथा आपराधिक प्रवृत्तियों में परिवर्तित हो सकते हैं।

खाद्य-असुरक्षा का अर्थ केवल भोजन की कमी नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक स्थिति है जिसमें परिवार भोजन के नियमित, पर्याप्त, संतुलित और सुरक्षित स्रोत से वंचित रहता है। यह समस्या उन परिवारों में अधिक देखी जाती है जहाँ आय सीमित, रोजगार अस्थिर और घरेलू आवश्यकताओं का दबाव अत्यधिक होता है। कम आय वाले परिवारों में भोजन चयन, आहार विविधता, पोषण संतुलन तथा भोजन की उपलब्धता कई बार अनिश्चित रहती है। ऐसी परिस्थिति में बच्चे निरंतर तनाव, असुरक्षा और अनिश्चितता में जीते हैं जो उनके व्यक्तित्व गठन और सामाजिक व्यवहार को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

गृह-विज्ञान का क्षेत्र उन सभी पहलुओं का अध्ययन करता है जो घर, परिवार, पोषण, जीवन-कौशल, सामुदायिक सहभागिता और संसाधन-प्रबंधन से संबंधित होते हैं। घरेलू वातावरण में बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास किस प्रकार प्रभावित होता है, इस दृष्टि से गृह-विज्ञान बाल-अपराध जैसे विषयों को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह केवल भोजन की मात्रा नहीं, बल्कि भोजन की गुणवत्ता, भोजन-व्यवहार, भोजन-तैयारी, मातृ शिक्षा, घरेलू अनुशासन, पारिवारिक सहभागिता और भावनात्मक पोषण जैसे सभी तत्वों को शामिल करता है। इसीलिए खाद्य-असुरक्षा और बाल-अपराध के बीच का संबंध गृह-विज्ञान के लिए गहन अध्ययन का विषय बन जाता है।

कम आय वाले परिवारों में अक्सर ऐसा देखा जाता है कि भोजन की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी माता या परिवार के किसी बड़े सदस्य पर केंद्रित रहती है। यदि परिवार आर्थिक संकट से गुजर रहा हो, तो यह जिम्मेदारी तनावपूर्ण बन जाती है। कई बार माताएँ स्वयं भूखे रहकर बच्चों को भोजन देने का प्रयास करती हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और घर का भावनात्मक संतुलन टूटने लगता है। जब बच्चे इस अस्थिरता को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करते हैं, तो उनमें असुरक्षा, अविश्वास, असंतोष और आक्रोश की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है। ऐसे वातावरण में पले-बढ़े बच्चे सामाजिक नियमों का पालन करने के बजाय चुनौतीपूर्ण या अपराध-प्रवृत्त व्यवहार की ओर अधिक आकर्षित हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त, कई मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में पाया गया है कि कुपोषित बच्चों में तंत्रिका-तंत्र का विकास प्रभावित होता है, जिससे उनकी ध्यान-क्षमता, आत्म-नियंत्रण क्षमता और भावनात्मक संतुलन कमजोर हो जाता है। ऐसे बच्चे आवेगपूर्ण निर्णय लेते हैं, जोखिमपूर्ण गतिविधियों की ओर तेजी से आकर्षित होते हैं और सहपाठियों के दबाव में आकर गलत दिशा में बढ़ जाते हैं। यह स्थिति बाल-अपराध के लिए अत्यंत अनुकूल वातावरण तैयार कर देती है।

कम आय वाले परिवारों में संसाधन-प्रबंधन की समस्या अत्यधिक जटिल होती है। घरेलू बजट सीमित होने के कारण भोजन की प्राथमिकता कई बार शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, यात्रा या अन्य आवश्यकताओं के मुकाबले पीछे रह जाती है। ऐसे परिवारों में भोजन की गुणवत्ता कई बार मात्रा पर निर्भर होती है, और पोषक तत्वों की ओर कम ध्यान दिया जाता है। फलस्वरूप बच्चे कमजोर प्रतिरक्षा, मानसिक थकान, चिड़चिड़ापन और नकारात्मक भावनाओं से ग्रस्त रहने लगते हैं। इन स्थितियों में वे ऐसे समूहों के संपर्क में आने लगते हैं जो उन्हें गलत गतिविधियों में संलग्न कर लेते हैं।

समाजशास्त्रीय अध्ययन बताते हैं कि जब बच्चे **आहा**र जैसी मूलभूत आवश्यकता के अभाव को बार-बार झेलते हैं, तो उनमें संस्थागत विश्वास (जैसे परिवार, स्कूल, समुदाय) कमजोर हो जाता है। वे मानने लगते हैं कि समाज उन्हें उनका अधिकार नहीं दे रहा है, और यह सोच उन्हें विद्रोह, हिंसा या चोरी जैसे अपराधों की ओर धकेल सकती है। खाद्य-असुरक्षा भौतिक कमी से अधिक मानसिक और भावनात्मक वंचना उत्पन्न करती है, जो अपराध की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को मजबूत करती है।

वर्तमान के डिजिटल युग में यह समस्या और अधिक जटिल हो जाती है। विज्ञापनों, सोशल मीडिया और उपभोक्तावादी संस्कृति में बच्चे आकर्षक खाद्य पदार्थों के संपर्क में रहते हैं, जिनकी प्राप्ति उनकी आर्थिक क्षमता से बाहर होती है। यह अंतर उन्हें निराशा, तुलना और असंतोष की ओर ले जाता है। कई बच्चे इन चीजों को पाने के लिए चोरी या अन्य गलत गतिविधियों का सहारा लेते हैं।

गृह-विज्ञान यह मानता है कि परिवार केवल आहार उपलब्ध कराने वाला नहीं, बल्कि व्यवहार-निर्माण, मूल्य-निर्माण और नैतिक विकास का केंद्र है। यदि परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा है, तो उसका प्रभाव भोजन के साथ-साथ बच्चों के नैतिक व्यवहार पर भी पड़ता है। बच्चे भावनात्मक सुरक्षा और स्थिर वातावरण की कमी को अपराध या असामाजिक गतिविधियों के माध्यम से बाहर निकालने की कोशिश कर सकते हैं।

सरकारी नीतियाँ जैसे मध्यान्ह भोजन (Mid-Day Meal), आंगनबाड़ी पोषण कार्यक्रम और सार्वजनिक वितरण प्रणाली खाद्य असुरक्षा को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। किंतु इन योजनाओं की प्रभावशीलता तभी बढ़ती है जब परिवार स्वयं भी भोजन-व्यवस्था और संसाधन-प्रबंधन में सक्षम हों। इसलिए खाद्य-असुरक्षा और बाल-अपराध की समस्या का समाधान केवल खाद्य उपलब्धता बढ़ाने से नहीं, बल्कि परिवारों में पोषण शिक्षा, कौशल-विकास, आर्थिक सुदृढ़ीकरण और मनोसामाजिक समर्थन प्रदान करने से संभव है।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य कम आय वाले परिवारों में भोजन-संबंधी समस्याओं, घरेलू संसाधनों की कमी, भावनात्मक अस्थिरता और बच्चों के व्यवहार-निर्माण के बीच विद्यमान संबंधों का गहन विश्लेषण करना है। गृह-विज्ञान दृष्टिकोण से बाल-अपराध को समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि यह समस्या केवल कानूनी दंड से नहीं, बल्कि घरेलू परिस्थितियों में सुधार से ही नियंत्रित हो सकती है।

निष्कर्ष

खाद्य-असुरक्षा और बाल-अपराध के बीच संबंध अत्यंत गहन, बहुआयामी और सामाजिक रूप से संवेदनशील है। कम आय वाले परिवारों में भोजन की अनिश्चितता बच्चों की भावनात्मक स्थिरता को कमजोर करती है, जिससे वे असामाजिक गतिविधियों की ओर तेजी से बढ़ सकते हैं। गृह-विज्ञान दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि भोजन की कमी मात्र शारीरिक संकट नहीं, बल्कि यह मनोवैज्ञानिक तनाव, पारिवारिक अस्थिरता और सामाजिक वंचना का संकेतक है।

अध्ययन यह दर्शाते हैं कि भूख और अल्पपोषण से पीड़ित बच्चे न केवल शारीरिक विकास में पिछड़ते हैं, बल्कि उनकी सामाजिक अनुकूलन क्षमता भी कमजोर हो जाती है। वे आवेगपूर्ण व्यवहार, जोखिम लेने की प्रवृत्ति, क्रोध, असुरक्षा और असंतोष की स्थिति में जीने लगते हैं। इस प्रकार की मानसिक अवस्थाएँ बाल-अपराध के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित करती हैं। भोजन की अनुपलब्धता या निम्न गुणवत्ता कई बार बच्चों को चोरी, दुकानदारी, नशा-संबंधी अपराध, हिंसा या समूह-अपराध की ओर धकेल सकती है।

गृह-विज्ञान यह सुझाव देता है कि भोजन-सुलभता में सुधार के साथ-साथ घरेलू संसाधन-प्रबंधन, मातृ शिक्षा, भोजन-व्यवहार प्रशिक्षण, सामुदायिक पोषण केंद्र, तथा बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य सहयोग कार्यक्रमों को मजबूत किया जाना चाहिए। एक सुरक्षित, पोषण-संपन्न और भावनात्मक रूप से समर्थ घरेलू वातावरण बाल-अपराध की प्रवृत्तियों को रोकने में अत्यंत प्रभावी होता है।

यह शोध स्पष्ट करता है कि यदि समाज खाद्य-असुरक्षा को केवल आर्थिक समस्या के रूप में देखने के बजाय इसे मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौती के रूप में समझे, तो बाल-अपराध की समस्या का दीर्घकालिक समाधान अधिक प्रभावी रूप से संभव है। नीति-निर्माताओं, शिक्षकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और परिवारों को मिलकर उन संरचनात्मक कारणों को दूर करने की आवश्यकता है जो भोजन की कमी और बाल-अपराध के बीच सेतु का कार्य करते हैं। अतः खाद्य-सुरक्षा सुनिश्चित करना, परिवारों को पोषण शिक्षा प्रदान करना, और सामुदायिक स्तर पर समर्थन संरचनाएँ विकसित करना बाल-अपराध की रोकथाम का सर्वाधिक स्थायी मार्ग है।

संदर्भ- ग्रंथ

1. गर्ग, सुषमा, बाल विकास और पोषण. भारतीय शिक्षा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृ. 45।
2. शर्मा, आर०के०, समाजशास्त्र और अपराध. राजीव प्रकाशन, जयपुर, 2017, पृ. 112।
3. कौशल, रेखा, गृह विज्ञान के सिद्धांत, आर०पी०एच० प्रकाशन, दिल्ली, 2019, पृ. 90।
4. वर्मा, मंजू, पोषण एवं बाल व्यवहा, प्रकाशन मंदिर, इलाहाबाद, 2020, पृ. 52।
5. तिवारी, विकास, गरीबी, पोषण और सामाजिक विचलन, शारदा बुक हाउस, लखनऊ, 2016, पृ. 103।
6. मल्होत्रा, इला, गृह-विज्ञान का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, एवरग्रीन पब्लिकेशन, दिल्ली, 2019, पृ. 134।
7. पांडेय, अंशुल, किशोर अपराध : मनोवैज्ञानिक आधार,भारत पब्लिकेशन, वाराणसी, 2018, पृ. 60।
8. सिंह, ज्योति, परिवार और संसाधन-प्रबंधन,ऑक्सफोर्ड एंड आईबीएच, मुंबई, 2021, पृ. 77।
9. कुमार, राजेन्द्र,सामुदायिक पोषण एवं कल्याण कार्यक्रम, यूनिवर्सल बुक्स, दिल्ली, 2020, पृ. 44।
10. मेहता, शुभ्रा, बाल-अपराध का समाजशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2022, पृ. 120।